01 Peer Reviewed 11

Scanned by CamScanner

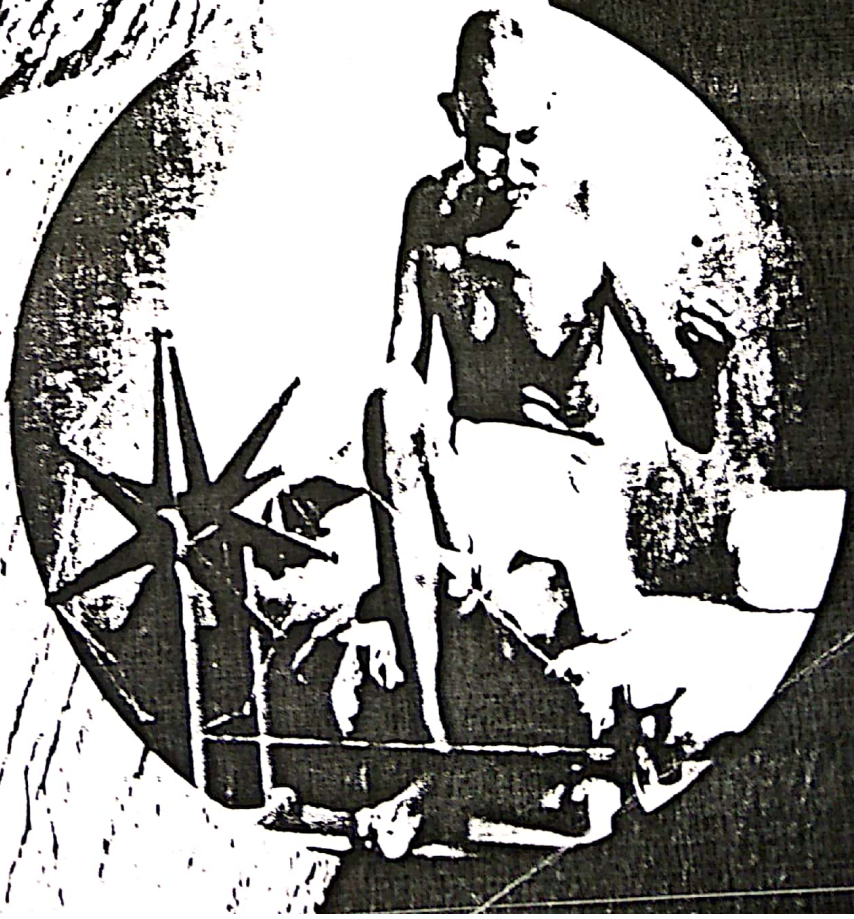

ISSN - 2322-0171

आध्यात्मिक शिक्षा से व्यक्ति का आत्मपरावर्तन

डॉ. सरोज राय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं नागौर

सूचना प्रौद्योगिकी चिकित्सा एंव विज्ञान के उच्च मानदण्डों के संवर्द्धन के साथ न केवल ज्ञान का विस्तार हुआ है, वल्कि भौतिक जगत की विकास यात्रा के उच्च कीर्तिमान स्थापित हुए है। इस तीव्र विकास की प्रगति ने मानवीय जीवन को प्रभावित किया है। जीवन शैली में वदलाव के साथ–साथ उनकी सोच में भी वदलाव आया है।

समय परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षा की अवधारणा भी परिवर्तित हुई है। आज शिक्षा का उद्देश्य आत्म विकास से विलग होकर मात्र जीविकोपार्जन से जुड़ गया हैं भौतिकता के चरमोत्कर्ष में आत्म–विकास एवं चारित्रिक विकास जैसे शब्द विलुप्त होते दिखाई देते हैं। शिक्षा का अर्जन करना आज युवाओं का "करिअर" वन गया हैं अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज और व्यक्ति की शिक्षा मात्र व्यावसायिक होकर रह गयी है। यही कारण है समाज और व्यक्ति की शिक्षा अनेक अन्तर्विरोधों, अन्तर्द्वन्दो, विविधमुखी समस्याओं से ग्रस्त है।

समाज का शिक्षा प्राप्त व्यक्ति जव नशे की भ्रामक दुनिया में भटकती हुई विध्वंश और अनाचार का परिचय देती है तव सम्पूर्ण राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था स्वतः एक समग्र चिन्तन का विषय वन जाती है।

अन्तर्निहित क्षमताओं से सम्पन्न युवा पीढ़ी के भटकाव की स्थिति को रोकने के लिए आज आवश्यकता है, व्यक्तित्व परिष्कार की, तराशने की तराश कर सही दिशा देने की ताकि समाज का हर शिक्षित व्यक्ति प्रखर व प्रभावी वन सके तथा फूलों की तरह सर्वत्र खुशवू विखेरे। अतः इसकी पूर्ति आध्यात्मिक की अन्तर्यात्रा परिसर हमारे लिए सवसे उपयुक्त स्थान हो सकता है।

एक प्रजातांत्रिक समाज की सफलता के लिए आवश्यक है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने विकास के लिए पर्याप्त अवसर हो ताकि वह समाज के प्रभाव पूर्ण एवं दायित्व पूर्ण सदस्य के रूप में दायित्वों का निर्वाह कर सके। समाज में एकता एवं निरन्तरता स्थापित करने मूल्यों परम्पराओं एवं आदर्शों को शिक्षा के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया जाता है तथा शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्तित्व में इन मूल्यों, परम्पराओं, आदर्शों को आत्मसात कराया जाता है। इस प्रकार समाज के सदस्यों को सचेत जागरूक वनाने के लिए शिक्षा आवश्यक है। जिस प्रकार की शिक्षा आज प्रदान की जा रही है। उसके प्रति हमारे विद्यार्थियों मं प्रतिदिन उदासीनता वढ़ती जा रही है, वढ़ी हुई इस उदासीनता के प्रमुख कारणों में गरीबी, संघर्ष, नशाखोरी, अपराध में वृद्धि परीक्षाओं के माध्यम से किए गए [illegible] हो गयी है जिससे उन्हें सामन्जस्य